भास्कर खास

बंधन बैंक; चंद्रशेखर घोष ने 14 साल पहले दो लाख रुपए का कर्ज लेकर शुरू किया था कारोबार

कभी मिठाई की दुकान चलाई, अब बैंक चलाएंगे

भास्कर न्यूज | कोलकाता

12 साल बाद देश में नया बैंक आ रहा है। बंधन बैंक। काम 23 अगस्त से शुरू होगा। चंद्रशेखर घोष इसके प्रमुख हैं। त्रिपुरा में पैदा हुए घोष का बचपन पूर्वी पाकिस्तान में बीता। 1971 में मुक्ति संघर्ष के दौरान लाखों लोगों की तरह चंद्रशेखर के पिता हरिप्रदा घोष भी बर्बाद हो गए।

बचा तो सिर्फ मिठाई बनाने का हुनर और सात बच्चों की जिम्मेदारी। नए बने बांग्लादेश में उनका हुनर कौन खरीदता। परिवार समेत कोलकाता आ गए। नई पहचान थी रिफ्यूजी की। हरिप्रदा ने मिठाई की दुकान शुरू कर दी। चंद्रशेखर तब 11 साल के थे। पिता के साथ दुकान जाने लगे। पढ़ाई चलती रही। एमए करने चंद्रशेखर ढाका चले गए। वहीं 1984 में एक एनजीओ में बतौर फील्ड ऑफिसर काम करने लगे। जहां काम किया वह बांग्लादेश का सबसे गरीब इलाका था। 13 साल बाद कोलकाता लौट आए। उसी मिठाई की दुकान पर। लेकिन मन रमा नहीं। फिर एनजीओ। इस बार कोलकाता में ही। तीन साल तक कई संस्थाओं में काम करने के बाद 2001 में खुद कुछ करने की सोची। तजुर्बे से जाना था कि गरीबी का उल्टा पैसा होता है। वही उनके पास नहीं था। बैंकों ने भी मना कर दिया। साहूकार से 7.5% प्रति माह की दर पर 1.75 लाख रुपए कर्ज लिया। 25 हजार बहन ने दे दिए। दो कर्मचारियों के साथ फाइनेंस का काम शुरू किया। संस्था का नाम रखा 'बंधन'। सिर्फ गरीब महिलाओं को पैसे देते। 2009 में बंधन को नॉन बैंकिंग फाइनेंस कंपनी के तौर पर रजिस्टर कराया। और अब रिलायंस, बिड़ला, बजाज जैसे 25 बड़े समूहों को पछाड़ कर बैंक का लाइसेंस हासिल किया। 23 अगस्त से बंधन बैंक काम करने लगेगा।

बंधन की 400 ब्रांच गांवों में होंगी, 200 शहर में

- बंधन में अभी 13,000 लोग काम करते हैं। इनमें 60% 12वीं पास हैं। बाकी सामान्य ग्रेजुएशन।
- एक वक्त था जब बंधन में काम करने के लिए सादा कागज बांट कर आवेदन मंगाए जाते थे।
- अभी बंधन के 60 लाख ग्राहक हैं। बंधन बैंक 11,000 करोड़ रुपए के खाते और 3,200 करोड़ रुपए की पूंजी के साथ बैंकिंग कारोबार में उतरेगी।